# जैन विश्व भारती-समण संस्कृति संकाय, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2014-2015

**9 अ**

## जैन विद्या भाग - 9

## (जैन दर्शन मनन और मीमांसा-खण्ड 3)

समय : 3 घण्टे प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं।

**(A) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें-** 10×2=20

1. न्यायशास्त्र का मुख्य विषय क्या है?
2. रूचि किसे कहते हैं, उसके कौन-कौन से कारण है?
3. आठ भेद कौन-कौन से हैं?
4. जीव में विकार और दृष्टि में विकार कौन उत्पन्न करता है?
5. पौषध करने के लिए मुख्यता कौनसी तिथियां श्रेष्ठ मानी गई?
6. सम्यक् दर्शन की प्राप्ति के तीन कारण कौन से हैं?
7. अकर्म जीव की ऊर्ध्व गति के कारण कौन-कौन से है?
8. उत्तम गौत्र कर्म के फल क्या है?
9. परमात्मा के आठ लक्षण कौन-कौन से है?
10. चार भवोपग्राही कर्म कब तक बने रहते हैं?
11. अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ किसके समान है?

**(B) किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर दें।** 8×5=40

1. धर्म के दो प्रकार, तीन प्रकार और दस प्रकार लिखें।
2. जाति भेद और गोत्र कर्म किसे कहते हैं?
3. मूल गोत्र और कुलार्य कौन-कौन से है? लिखें।
4. निरपेक्षता के कौन-कौन से रूप बनते हैं और उसका परिणाम क्या होता है?
5. साम्प्रदायिक सापेक्षता के सूत्र लिखें।
6. आत्म विकास के पांच सूत्र कौन-कौन से है?
7. भगवान ने साधना का मानदण्ड क्या बताया?
8. निरपेक्ष दृष्टि का त्याग ही समाज को शान्ति की ओर अग्रसर कर सकता है। समझाइये।
9. ईश्वर के संबंध में जैन दर्शन की क्या मान्यता है?

**(C) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें-** 4×10=40

1. मोक्ष के साधक-बाधक तत्त्व पर प्रकाश डालें।
2. अक्रियावाद को विस्तार से लिखें।
3. ब्रह्मचारी की चर्चा कैसी होनी चाहिए?
4. अहिंसा महाव्रत और अणुव्रत को विस्तार से समझाएं।
5. सापेक्षता के सूत्र क्या है?